# Snehal Sindhu

Monthly Bulletin for Divine Message of Spiritual Relationship, Friendship and Love
Vol. 010 Issue 03 MAR 2024 Pages 32 A.S. Rs 100

"આતમની ભીતર, મુકતોની માંહે, હું તો રહ્યો સહુ સંગે, દિવ્ય દેહે આજે..."

– ગુરુહરિ કાકાજી મહારાજ

# सत्संग समाचार

**❊ शनिवार, दि. ३ फरवरी को 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई का २१वाँ पाटोत्सव और गुरुहरि काकाजी महाराज का ७२वाँ साक्षात्कार दिन प.पू. दिनकरभाई और सभी संतभाईयों की उपस्थिति में भक्तिभाव से मनाया गया।**

"Akshardham" Temple, Powai Patotsav

सबसे पहले पू. हितेनभाई, प.भ. पियुषभाई खोरसियाने सभी संतभाईयों और हरिभक्तों के हस्त पाटोत्सव की विधि करवाई।

**प.पू. दिनकरभाई और प.पू. भरतभाई** के विशिष्ट आशीष का लाभ सभीको मिला और उसके बाद पोटात्सव निमित्त अन्नकूट ठाकोरजी को अर्पण हुआ।

**आज के मंगल दिन निमित्त विशिष्ट महापूजा हुई और सभी भक्तों हर प्रकार से सुखी रहे इसलिये वशीभाईने संकल्प भी करवाया।**

**उसके बाद प.भ. उषाबहन खंडेलवालने काकाजी की स्मृति में भजन प्रस्तुत किया।**

"Akshardham" Temple, Powai Patotsav

**माहात्म्यदर्शन की शृंखला में प.भ. हेमंतभाई मर्चन्ट ने** कहा कि पू. दासस्वामीजीने भजन की कडी में लिखा है कि 'मन-वाणी-चित्त-बुद्धि सर्वे गद्‌गद् थईने मौन रहे।' गुरुहरि काकाजी के लिये क्या बोले? शब्द ही नहीं है। यहाँ विराजमान सभी स्वरुपोंने उन्हें सही अर्थ में पहचाना है और आत्मसात किया है। वही ज्ञान हमें बाँट रहे है। काकाजी का जीवनसूत्र था जो दासस्वामीजीने हे स्नेहलसिंधु भजन में लिखा है कि 'कर्युं कांई अमे नहीं, सर्व ते कर्युं, संबंध स्थापी टकावी स्मित तें जाळव्युं...' सत्संग से जुडने हमें ज्यादा प्रयत्न करने नहीं पडे। हमारा पूरा परिवार पहले से ही काकाजी के साथ ऐसे जुडा था कि हमें उनमें सहज ही रुचि हो गई। मैं छोटा था तब योगीबापा हमारे घर आये थे और कईबार रात को रुके भी थे। उसके बाद मैं जब काकाजी के दर्शन के लिये गया तब वे पूछ रहे थे कि इतने बडे पुरुष आपके घर पधारे तो आपने बापा को पहचाना या नहीं? तब मैं ११-१२ साल का ही था, तो ऐसा कुछ समझमें आया नहीं था कि काकाजी क्या कहना चाहते थे? कुछ सालों बाद वह समझमें आया कि वे ऐसा कह रहे थे कि तुम हमारे सामने हो तो अब हमको तो पहचान लो। वे हमेशा कहते थे कि Live life by giving out. कुछ देकर जीने की भावना रखो। तो यहाँ जो संतभाईयों, संतबहनों है उन्होंने अपना सबकुछ दे दिया, ऐसे वे जीवन जीते है। तो हम किसीके भी स्वभाव को देखे बिना उनका महिमा समझके सेवा करें वही प्रार्थना।

**प.भ. पाथेयभाई ने** कहा कि गुणातीत समाज का निर्माण जहाँ से हुआ उस स्थान पर हम अभी बैठे है। गुरुहरि काकाजी यानि बहुत ज्यादा पढे-लिखे और बुद्धिशाली। फिर भी योगीबापा की मर्जी के आगे अपना सबकुछ छोड दिया। गुणातीतानंदस्वामी की बात में लिखा है कि शिष्य से ज्यादा दाखडा गुरु करता है। हम बहुत नसीबदार है कि ऐसे स्वरुपों की हमें भेट मिली। हमारे लिये ये प्रगट स्वरुपों बहुत परिश्रम करते रहते है। स्वामीजी कहते थे कि दास का दास हमें होना है। हमें सबको साथ लेकर चलना है। यहाँ जो भी आयेगा उसे अपनी तकलीफ का समाधान जरुर से मिलेगा। ऐसा कहा जाता है कि जैसे महाभारत में भीमने युद्ध के समय कईं हाथीओं को आकाश की ओर फैंका था, वो आज तक नीचे नहीं आये। लेकिन काकाजी को योगीबापाने जो ७२ घंटे का साक्षात्कार करवाया वह तो सत्य घटना हुई है। तो ये गुणातीत स्वरुपों राजी हो ऐसा हम जीवन जीये वही प्रार्थना।

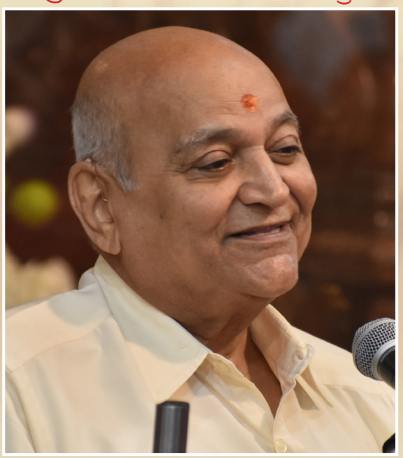

**प.भ. प्रवीणभाई लाड ने** कहा कि गुरुहरि काकाजी के संबंध मात्र से हमें भी साक्षात्कार हो गया है। योगीबापा साक्षात् पुरुषोत्तम नारायण का स्वरुप थे वह सच्ची पहचान काकाजीने सभीको करवाई। काकाजीने निर्दोषबुद्धिरुपी चाबी देकर साक्षात् की उपासना दृढ करवाई। सभी में हम काकाजी के दर्शन करेंगे तो निर्दोषबुद्धि सहज हो जायेगी। आज हम यहाँ बैठकर सहज में अक्षरधाम का सुख ले रहे है वह निरंतर रहे उसके लिये हमें अखंड निर्दोषता से जीवन जीना है। काकाजीने अपने साथीओं के साथ मिलकर पूरे ब्रह्मांड में ऐसा गुणातीत समाज तैयार किया जिससे अंतर का सुख हमें मिल रहा है। तो काकाजी के कार्य को हम आगे बढाते रहे वही प्रार्थना।

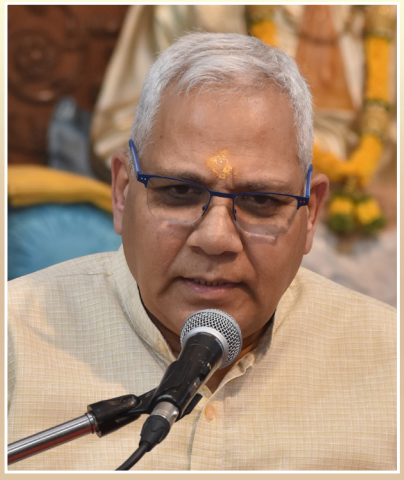

उसके बाद Audio द्वारा **प.पू. ज्योतिबहन** के आशीष सभीको मिले। उन्होंने कहा कि भगवान हमेशा हमारे साथ है। हमें कभी भी हारना नहीं है, नकारात्मक सोच रखनी नहीं है। हमेशा आनंद में रहना चाहिए। काकाजी बार-बार कहते है कि मैं किसकी घरवाली हूँ? वो ऐसे केफ में रहते थे तो हम उनके शिष्य होकर केफ में क्यों नहीं रह सकते? काकाजीने हरपल मान-अपमान, सुख-दु:ख सभी में केवल भगवान का आसरा लिया। भगवान को ही कर्ताहर्ता मानते थे। हम मंदिर में आते है तब जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म, परब्रह्म ऐसे पाँच तत्त्व दिखने ही वाले है। लेकिन हमें ऐसे केफ में रहना कि हमें किसीका बिलकुल अभाव-अवगुण न आये। कैसा भी प्रसंग बने हमारे अंतर की शांति जानी नहीं चाहिए।

**प.पू. वशीभाई ने** कहा कि भरतभाईने जो तीन बात बताई उतना तो हम दृढ कर ही ले कि **(१) हम धुन करें। (२) हररोज एक सत्कर्म तो करें और (३) सभीके गुणगान गाये।** गुरुहरि काकाजी महाराज के साक्षात्कार की विशेषता यही है कि उन्होंने वह अपने तक सीमित नहीं रखा बल्कि हम सब में बाँटा। मूल अक्षर के भाव को अगर हम प्राप्त करेंगे तो सहज ही काकाजी के साक्षात्कार का अनुभव होगा। काकाजी कहते थे कि धनसत्ता, राज्यसत्ता और प्रभुसत्ता। ये प्रभुसत्ता की शक्ति मिलने के बाद काकाजीने वह सभीको दिया। हम स्वामिनारायण भगवान के भक्त है, सत्संगी है और जैसे जैसे आध्यात्मिकता में

Guruhari Kakaji Maharaj Shakshatkar Din at "Akshardham" Temple, Powai

हमारी स्थिति बढती है, वैसे वैसे हमारी जिम्मेदारी ज्यादा बढती है। उस जिम्मेदारी को काकाजी खुद के जीवन से जीकर हमें दिखाया है। काकाजी कहते थे कि माता को हो, महादेव का हो... लेकिन ऐसे किसी भी भगवान को माननेवाला भी मेरा है ऐसा मानाना वही सहजानंद के साथ की सच्ची एकता है। हम सभी के साथ मैत्री नहीं कर पाते लेकिन २-५ के साथ तो कर ही सकते है। सबकुछ कहना बहुत सरल है, लेकिन सामनेवाला को माथा का मुगट मानना वह कठिन है। तो हम काकाजी में हरपल जीते हो जाये वही प्रार्थना।

**प.पू. भरतभाई ने** कहा कि हरिप्रसादस्वामीजी कहते थे कि Election लडकर भगवान का साक्षात्कार होना यह बात किसीको समझमें आयेगी ऐसी नहीं है। इडर का गढ जिताकर योगीबापाने प्रकृतिपुरुष का लोक जितवा दिया। साक्षात्कार होने के दो कारण स्वामीजीने बताये। **(१) काकाजी को योगीबापा पे पूर्ण विश्वास था। (२) हर कठिन परिस्थिति में केवल भगवान का सहारा लेना।**

'स्वामिनारायण प्रकाश' में साक्षात्कार का पूरा प्रसंग लिखा है। योगीबापाने साक्षात्कार की बात खुद के अक्षरों में डायरी में लिखी है। काकाजी कहते थे कि Intense aspiration. तीव्र अभीप्सा से हम जो कार्य करेंगे भगवान जरुर सहाय करेंगे। काकाजी कहते थे कि हाथी का बच्चा चूँहे जैसा होता है? वो कहना चाहते थे कि हमें पूर्ण पुरुषोत्तमनारायण प्रगट स्वरुप मिले है तो उसका केफ कैसा होना चाहिए, तो हमें ऐसा पात्र बनना है। अंत में सन् १९५१ में काकाजीने पप्पाजी को पत्र लिखा था और सन् १९६३ का योगीबापा का साक्षात्कार का पत्र 'पत्रसंजीवनी' पुस्तक में से उन्होंने पढा।

**प.पू. दिनकरभाई ने** कहा कि आज का दिन यानि गुरुहरि काकाजी महाराज के शब्दों में कहे तो उनका Happiest Day. बडेपुरुष की जब कृपा होती है तो सारे चक्र गतिमान होकर हमारी तरफ हो जाते है। वैसे काकाजीने शास्त्रीजी महाराज को राजी करने अपना सबकुछ न्योछावर कर दिया। फिर योगीजी महाराज की मर्जी जानकर Election में नंदाजी को जिताया। Politics की तरह जितने जायेंगे तो हम नहीं जीत पायेंगे। मगर उसमें भगवान को आगे रखेंगे तो जीत जायेंगे। पहले प्रभु, बाद में कदम। तो काकाजीने वही इडर में किया। उस गांव में काकाजी सबको बोलते थे कि आपने इडर के महाराज को देखा नहीं है,

Guruhari Kakaji's Shakshatkar Din celebration in Australia

तो बिना देखे उसको Vote देने में क्या फायदा होगा? ये हमारे प्रत्यक्ष नंदाजी आपके सामने है उसको Vote देना। तो हमारी पूजा प्रत्यक्ष की है। ऐसा जादु करके काकाजीने सभीका दिल जीत लिया था। परिणाम आने के एक रात पहले काकाजीने पूरी रात को सभीको बहुत धुन करवाई थी। इडर के राजाने खुद की जीत मानकर ४० किलो मीठाई मंगावी ली थी। धुन और योगीबापा के आशीर्वाद से नंदाजी जीत गये थे। फिर नंदाजी को लेकर काकाजी राजा को मिलने गये थे और मीठाई सभीको अपनी तरफ से देने को कहा। ऐसे उसके साथ भी काकाजीने दोस्ती की थी। तो ऐसे हमें जो प्रगट मिले है उसे पहचानना ही होगा। तो इसी जन्म में ब्रह्मरुप की स्थिति प्राप्त कर ले इसलिये हमें जो मिले है उन्हें पहचाने और उनकी आज्ञा में रहे वही प्रार्थना।

उसी प्रकार गुणातीत समाज के अन्य केन्द्रो में भी काकाजी का साक्षात्कार दिन मनाया गया।

❊ **सोमवार, दि. ५ से दि. १३ फरवरी दौरान महाराष्ट्र के कईं स्थानों में प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई और अन्य संतभाईयों, संतबहनोंने हरिभक्तों के घर पधरामणी करके भजन-सत्संग का लाभ दिया, साथ ही भरतभाई का प्रागट्यदिन भी मनाया।**

**दि. ५ को पू.डॉ. निलमबहन और संतबहनोंने नासिक में प.भ. सचिनभाई-प.भ. जयाबहन कुकडे के घर पधरामणी की।**

P. Neelamben at Nasik

**उसी दिन संतभाईयोंने संभाजी नगर तथा जालना में प.भ. मोनुबहन, प.भ. नरेशभाई के भाई प.भ. अमितभाई मुले के वहाँ पधरामणी की और जालना के पंचमुखी महादेव मंदिर में विशिष्ट सभा भी की।**

At Monuben's home

At Amitbhai's home

Special Sabha at Jalna

Special Sabha at Jalna

❊ **बुधवार, दि. ७ फरवरी की भजन संध्या संभाजी नगर में 'मेरे तो तुम जीवनप्राण आधारा...' विषय पर सभी संतभाईयों, संतबहनों, स्थानिक एवं मुबंई के कईं हरिभक्तों की उपस्थिति में भक्तिभाव से मनाई गई।**

Bhajan Sandhya at Sambhaji Nagar

**प.पू. भरतभाई ने** आशीष देते हुए कहा कि गुरुहरि काकाजी स्वधाम पधारे तब उन्हें रात को Ambulance द्वारा गुजरात लेकर जा रहे थे। डोंबिवली के मनसुखभाई (अभी हरिद्वार)ने जब नई जीप ली थी तब उन्हें मन में संकल्प हुआ कि काकाजी उनके जीप में बैठकर प्रसादी की करें। लेकिन काकाजी तो स्वधाम चले गये थे। फिर काकाजी के पार्थिव देह को अंतिम संस्कार के लिये Ambulance में विद्यानगर लेकर जा रहे थे तब रास्ते में Ambulance बिगड गई, तो पीछे मनसुखभाई जीप में आ रहे थे उनकी जीप में काकाजी को विराजमान किया गया। इस प्रकार स्थूलदेह से काकाजी प्रगट भी नहीं थे, फिर एक भक्त का भाव पूरा करने ऐसा

Bhajan Sandhya at Sambhaji Nagar

Bhajan Sandhya at Sambhaji Nagar

प्रसंग खडा किया। आज वो प्रसादी की जीप प.पू. गुरुजीने दिल्ली मंदिर में रखी है। तो ऐसे गुणातीत स्वरुपों की स्मृति अखंड होती है। उसके साथ भजन-प्रार्थना करेंगे तो उसकी शक्ति ज्यादा बढ जाती है। महिमा के साथ उनकी स्मृति करेंगे तो उससे भी दोगुना बल हमें प्राप्त होगा। हम सामान्य क्षुल्लक वस्तु के पीछे भागते है, किसीने मान दिया, नहीं दिया, इन सब बातों के पीछे हम हमारा समय बहुत ज्यादा गवा देते है। तो ये सत्संगरुपी चिंतामणी के रुप में हमें ये प्रगट स्वरुपों मिले है तो बाकी सब छोड देना चाहिए। काकाजीने अपने जीवन में केवल एक ही निशान रखा कि योगीबापा राजी हो वही करना। तो हम काकाजी की स्मृति में ज्यादा से ज्यादा डूबे वही प्रार्थना।

**प.पू. वशीभाई ने** कहा कि विद्यानगर के संतबहन प.पू. देवीबहन दि. ६ फरवरी को स्वधाम पधारे थे इसलिये आज की भजन संध्या हम देवीबहन को अर्पण करते है। योगीबापा की आज्ञा से गुरुहरि काकाजी, गुरुहरि पप्पाजीने बहनों का कार्य आगे बढाया। बहनों के भगवान भजने का प्रारंभ हुआ वो गुणातीत ज्योत की चार बहनों से हुआ। काकाजी बहुत बुद्धिशाली और अंतर्यामी स्वरुप थे फिर भी सभी के आगे सरल होकर जीवन जीये। दिनकरभाई बडे सत्पुरुष है फिर भी कम बोलते है और शांत रहते है। भरतभाई अंतर्यामीरुप से सब जानते है फिर भी साक्षीभाव से जीवन जीते है। दीपकभाईने Yoga के लिये १०८ शिक्षकों को तैयार किया। तो हमारे योगी डिवाईन सोसायटी के लिये यह Yoga बहुत बडी बात है। तो हम ऐसे साक्षीभाव में रहकर केवल मूर्ति पकडकर रखें वही प्रार्थना।

**प.पू. दिनकरभाई ने** आशीष देते हुए कहा कि गुरुहरि काकाजी महाराज और ब्र.स्व. भगतजी महाराज के जीवन में बहुत साम्यता दिखती है। काकाजी दि. ७ मार्च और भगतजी महाराज दि. ७ नवंबर को धाम में

Certificates given to new Teachers for Yoga Classes at Sambhaji Nagar

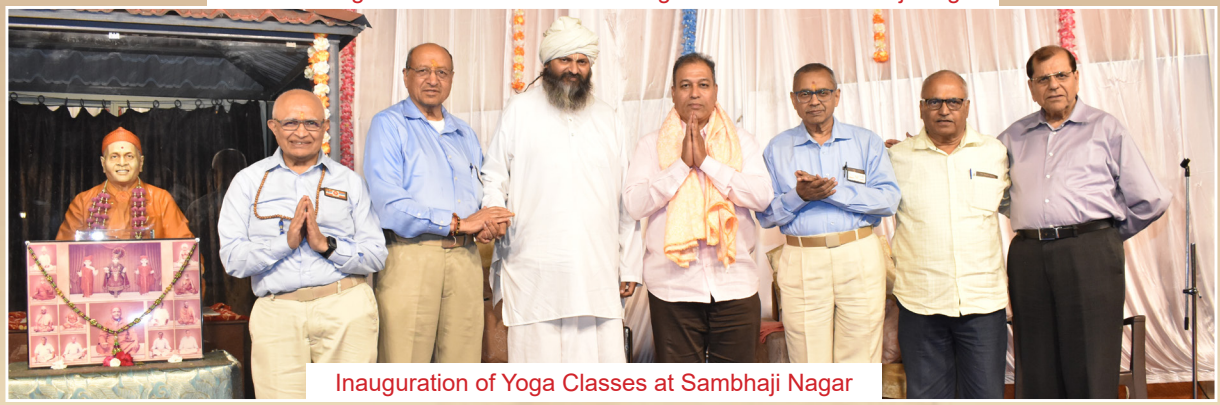

Inauguration of Yoga Classes at Sambhaji Nagar

गये थे। काकाजी करीब ७ बार अमेरिका आये थे। गुरुजी भी कोई भी शुभ कार्य के लिये ७ नंबर को बहुत पसंद करते है। परीक्षित राजा को भी ७ दिन में मोक्ष हुआ था। तो इस क्रमांक का बहुत महत्व है। पेरिस में २०१३ में काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी महोत्सव मनाया था तब प.पू. शांताबहन धाम में गये थे इसलिये ज्योतिबहन को वापस भारत आना पडा था। वैसे डॉ. नीलमबहन आज यहाँ संभाजी नगर में भजन संध्या और भरतभाई के प्रागट्यदिन के लिये खास पधारे थे लेकिन देवीबहन स्वधाम पधारे तो उनको वापस विद्यानगर जाना पडा। जैसे गुणातीत ज्ञान बढेगा वैसे हमें काकाजी के दर्शन हर किसीमें होंगे। इसलिये हम यह भजन संध्या करते है। काकाजी सुहृदभाव, निर्दोषबुद्धि तथा भक्त में भगवान देखने का संदेश लेकर आये। ऐसी समझदारी से हम जीवन जीयेंगे तो कई जन्मों के प्रारब्ध हट जायेंगे और अक्षरधाम का सुख सहज प्राप्त होगा। तो हम बडेपुरुष को राजी कर ले वही प्रार्थना।

प.भ.डॉ. दीपकभाई परमार के पास Yoga की तालीम प्राप्त कर संभाजी नगर के कई हरिभक्तोंने प्रशिक्षण प्राप्त किया। आज के दिन इन सभी शिक्षिकाओं को सर्टिफिकेट दिया गया और उनका तथा डॉ. दीपकभाई का अभिवादन भी हुआ। सभी संतभाईयोंने मिलकर दीपप्रागट्य करके संभाजी नगर के काकाजी ध्यान योग केन्द्र में योगी डिवाईन सोसायटी संचालित Yoga Classes का प्रारंभ किया।

*** गुरुवार, दि. ८ फरवरी को काकाजी उद्यान में प.पू. भरतभाई का ७०वाँ प्रागट्यदिन प.पू. दिनकरभाई तथा सभी संतभाईयों, संतबहनों तथा कई हरिभक्तों की हाजरी में आनंदोत्सव के साथ मनाया गया।**

**प्रारंभ में संभाजी नगर में एक जीप में संतभाईयों और आगे भाभी मंडल की बहनोंने लेझिम करके सभीका विशिष्ट स्वागत किया।**

**मंच की सजावट 'संत परम हितकारी' विषय के साथ भरतभाई की विशिष्ट छबीओं का दर्शन कराते हुए सुंदर तरीके से किया गया था।**

P.P. Bharatbhai's 70th Birthday celebration at Sambhaji Nagar

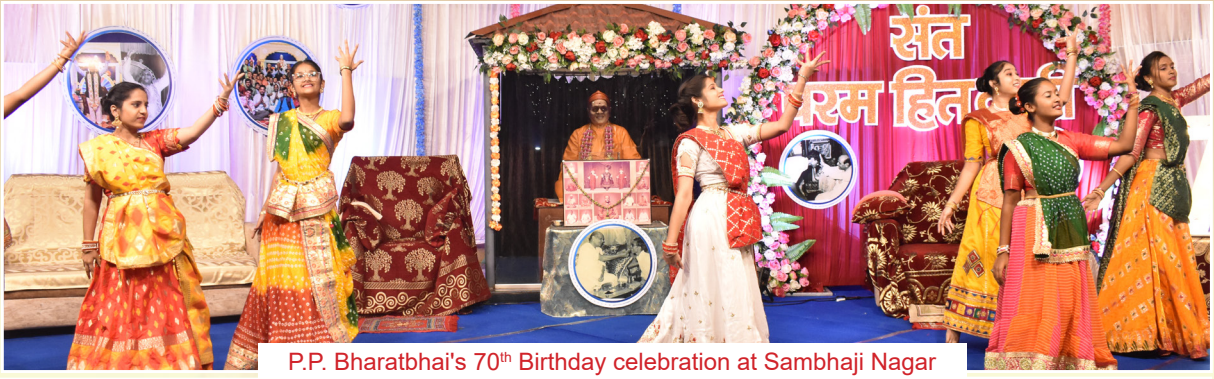

P.P. Bharatbhai's 70th Birthday celebration at Sambhaji Nagar

उसके बाद युवती और युवक मंडलने विशिष्ट नृत्य प्रस्तुत करके भरतभाई के चरणों में अपना भाव रखा।

माहात्म्यदर्शन की शृंखला में Video द्वारा संभाजी नगर के कई हरिभक्तोंने भरतभाई के साथ के अनुभव प्रसंगो बताये।

उसके बाद प.भ. सतीशभाई खेरे, प.भ. अशोकमामा, प.भ. पिंगेसाहब, प.भ. कामळेसाहब, प.भ. मेघाबहन जहागीरदार, प.भ. दीपकभाई जहागीरदार, पू. अक्षयभाईने भरतभाई के साथ के स्वानुभाव द्वारा प्रसंग बताकर अपना भाव उनके चरणों में रखा।

P.P. Bharatbhai's 70th Birthday celebration at Sambhaji Nagar

**बालमंडल के छोटे सभ्य सहजभाई नाईकने Keyboard पर जन्मदिन की Tune बजाकर भरतभाई के समक्ष अपना भाव रखा।**

**प.पू. दिनकरभाई ने** आशीष देते हुए कहा कि दि. ७ जनवरी से हम भरतभाई का प्रागट्यदिन मना रहे है। आज ८ फरवरी को यहाँ संभाजी नगर में मना रहे है। भरतभाई काकाजी के लाडले वारसदार है। काकाजी कहते थे कि मेरे जीवन में शास्त्रीजी महाराज का प्राधान्य सबसे आगे रहा। ऐसे भरतभाई का

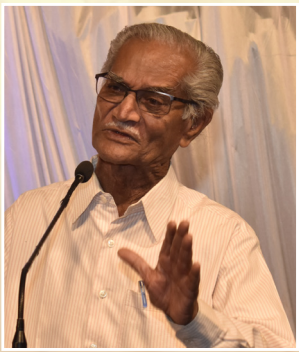

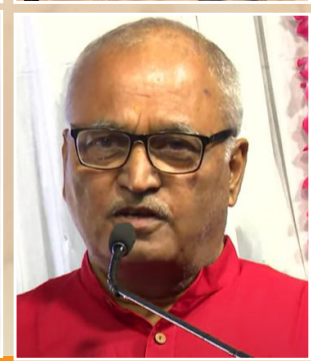

प्रागट्यदिन दि. ३१ जनवरी शास्त्रीजी महाराज के प्रागट्यदिन के साथ ही आता है। भरतभाई तैयार हुए तो वह काकाजी का Happiest Day में से एक है। भरतभाई काकाजी के साथ ऐसे समझदारी से जुड गये। काकाजी का वचन भरतभाई के लिये सबकुछ था। उनके अक्षर बहुत अच्छे है, इसलिये काकाजी जो भी लिखना होता था वो भरतभाई को कहते थे। भरतभाई कहते थे कि मैं काकाजी को मिला तब से ही ऐसा पक्का कर लिया था कि कभी भी उनके पास कुछ मांगना नहीं है। उससे भरतभाई के अंदर एक विशिष्ट दिव्यता जाग्रत हो गई। कोई विचार या संकल्प रहा ही नहीं। हमारा मन हमें गलत रास्ते पर लेकर जाता है, लेकिन बडेपुरुष को राजी करने लिये कार्य करेंगे तो सब अच्छा ही होगा। भरतभाई-वशीभाईने यहाँ के भक्तों को आगे लेकर काकाजी को बहुत राजी कर दिया है। प्रगट स्वरुपों हमारी हमेशा रक्षा करते है। आज यहाँ ऐसा सत्संग समाज देखकर गुणातीतानंदस्वामी भी बहुत राजी होते होंगे। २०० साल पहले बहुत कम लोग जुडते थे। उस समय का ब्रह्मरुप का ज्ञान आज छोटे बच्चे में भी दिखाई पडता है। तो भरतभाई की सेहत हमेशा अच्छी रहे वही प्रार्थना।

**प.पू. भरतभाई ने** आशीष देते हुए कहा कि आज Return Gift में जो मैं बताता हूँ वो लेकर जाना और ये तीन बात जीवन में दृढ करने का संकल्प करना। **(१)** हररोज कुछ अच्छा काम करें। बिना किसी स्वार्थ के एक सत्कर्म अवश्य करें। केवल प्रभु को राजी करने की भावना अंतर में रखनी है। सत्कर्म कैसे करें वह नहीं समझमें आता हो तो कोई बीमार हो या किसीको कोई तकलीफ हो तो उसके लिये निरपेक्षभाव से ११ माला फिराना। **(२)** भजन - हररोज भजन में हमें जुडना है। जब भी समय मिले स्वामिनारायण धुन करो। धुन करने से अंतर का कचरा साफ होता है। किसीके अभाव-अवगुण में बिलकुल नहीं जाना है। **(३)** गुणगान गाओ - कुछ नहीं होता तो कोई भी दो भक्तों के गुणों का महिमागान करो।



हमें प्रगट स्वरुपों सहज में मिले है, ऐसा सत्संग मिला है तो हम उसे पकडकर चलेंगे तो हमारा आनंद कभी भी कम नहीं होगा। योगीजी महाराजने बहुत सहन किया, लेकिन उनके चहेरे पर से स्मित कभी कम नहीं हुआ। तो हम हमेशा आनंद करते रहे, खुश रहे और कोई भी तकलीफ हो तो प्रभु के चरणों में रख दे वे अवश्य सहाय करेंगे।

P.P. Bharatbhai's 70th Birthday celebration at Sambhaji Nagar

उसके बाद छावणी मंडल की ओर से श्रीमती पद्मश्रीबहन तथा संभाजी मंडल की भाभीओंने बनाया हुआ हार भरतभाई को अर्पण हुआ।

अंत में केक कटिंग करके इस कार्यक्रम की पूर्णाहुति हुई।

प.भ. नरेशभाई मूलेने पूरे कार्यक्रम का संचालन बहुत भक्तिभाव से किया।

P.P. Bharatbhai's 70th Birthday celebration at Sambhaji Nagar

**दि. ७ से ९ फरवरी** तक सभी संतभाईयोंने संभाजी नगर में प.भ. निखिलभाई गट, प.भ. विकासभाई येवले, प.भ. संकेतभाई मेघानंद, प.भ. विशालभाई बिरादर, प.भ. सारिकाबहन, प.भ. ओम्भाई मोहिते, प.भ. ऋषिकेशभाई जाधव, प.भ. मेघनाबहन जहागीरदार, प.भ. अभिजितभाई जाधव और मूर्तिजापूर में प.भ. खेडेकरसाहब, प.भ. सुनिलभाई सट्टीवालेजी के घर पधरामणी की तथा सत्संग भी किया। साथ ही भरतभाई का प्रागट्यदिन भी कई भक्तोंने भाव से मनाया।

At Nikhilbhai Gatt's home

At Vikasbhai Yewale's home

At Sanketbhai Meghanand's home

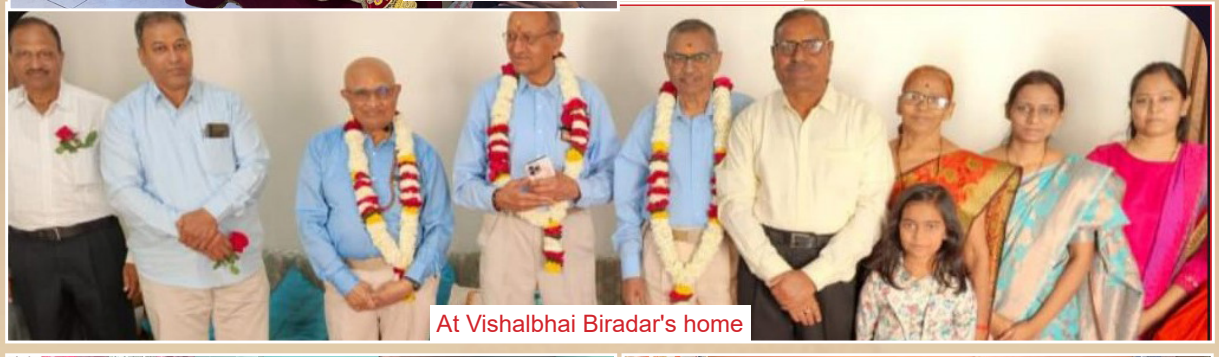

At Vishalbhai Biradar's home

At Om Mohite's home

At Rinaben Raut's home

At Rushikeshbhai's home

At Meghaben Jahagirdar's home

At Abhijitbhai Jadhav's home

At Shri. Khedekarji's home, Murtijapur

At Sunilbhai Sattiwale's home, Akola

Sabha and Bharatbhai's Birthday celebration at Akola

At Nareshbhai Kawale's home, Akola

At Gajananbhai Dhale's home, Akola

At Paraskarbhai's home, Akola

At Bhikhubhai Bhatt's home, Akola

At Rambhai's home

At Chetanbhai Bhatt's home, Nagpur

At Dr. Sudhakarbhai Reddy's home, Akola

At Amarbhai Donge's home, Nagpur

At Nileshbhai's home, Nagpur

At Meghanaben's home, Nagpur

At Ajay Budhe's home, Nagpur

At Shashankbhai's home, Nagpur

**दि. १० से १२** अकोला तथा नागपुर में प.भ. नरेशभाई कवले, प.भ. गजाननभाई ठाले, प.भ. परासरभाई, प.भ. भीखुभाई भट्ट, प.भ. रामभाई कवले, प.भ.डॉ. सुधाकरभाई रेड्डी, प.भ. चेतनभाई-प.भ. कृष्णाबहन भट्ट, प.भ. अमरभाई डोंगे, प.भ. निलेशभाई, प.भ. भरतभाई-प.भ. मेघनाबहन रेड्डी (चौरसिया), प.भ. अजयभाई बुधे, प.भ. शशांकभाई बुंदेले के घर पधरामणी करके आनंद किया।

**❊ रविवार, दि. ११ फरवरी को नागपुर के शिक्षक सहकारी बँक लि. के हॉल में प.पू. भरतभाई का ७०वाँ प्रागट्यदिन करीब ३०० हरिभक्तों की हाजरी में मनाया गया।**

**प्रारंभ में प.भ. मेघनाबहन रेड्डी (चौरसिया) के विद्यार्थीओने विशिष्ट भावनृत्य करके सभी संतभाईयों का स्वागत किया।**

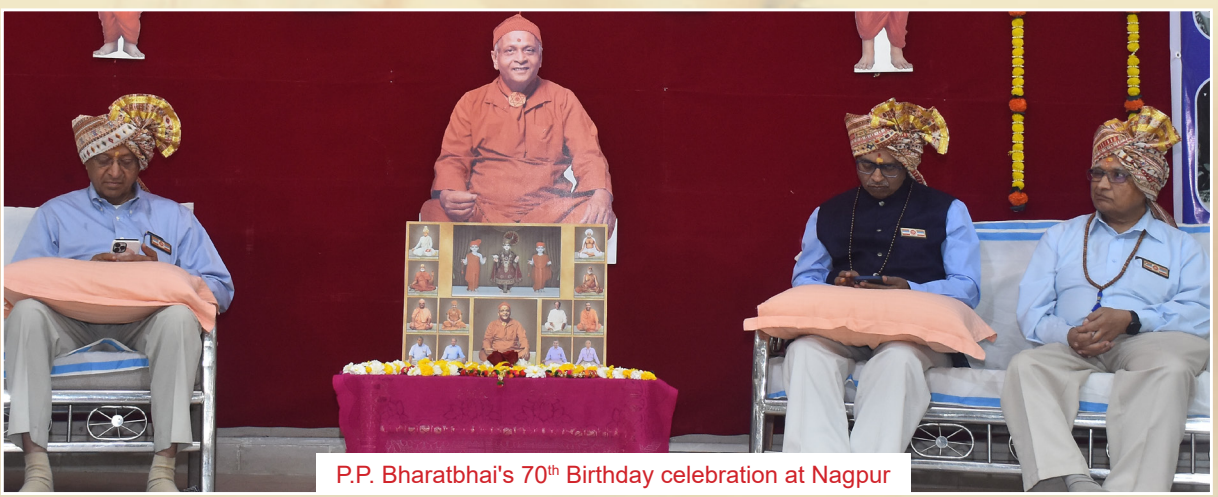
P.P. Bharatbhai's 70th Birthday celebration at Nagpur

P.P. Bharatbhai's 70th Birthday celebration at Nagpur

**पवई से प.पू. वशीभाई ने** कहा कि आज भरतभाई का प्रागट्यदिन नागपुर में मना रहे है तो वहाँ के भक्तों का भाग्य की बात है। शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज को सुहृदभाव बहुत पसंद था। तो बिना किसी आयोजन जीवनभाई और अन्य सभी नागपुर के भक्तोंने मिलकर आज कार्यक्रम कर रहे है बहुत बडी बात है। आज आप जो मी मांगोगे वह जरुर मिलेगा। तो आप दो संकल्प करना - **(१) आध्यात्मिक और (२) व्यवहारिक।** भरतभाई काकाजी को मिले तब से लेकर आज तक केवल उनकी मर्जी के मुताबिक ही जीवन जी रहे है। काकाजी कहते थे कि भरतभाई मन बगैर के पुरुष है। भरतभाई के हम गुण लेंगे तो हमारे सारे काम हो जायेंगे। स्वामिनारायण भगवानने विशिष्ट वरदान ये दिया कि वे गुणातीत संत द्वारा पृथ्वी पर अखंड प्रगट रहेंगे। तो ऐसे मौके पर इन स्वरुपों का राजीपा प्राप्त कर लेना।भविष्य में बडे पैमाने इसप्रकार यहाँ भरतभाई का प्रागट्यदिन मना सके और सभी हमेशा खुश रहे वही प्रार्थना।

नागपुर के आमदार श्री. विकासजीने भरतभाई को हार पहनाया और आशीष प्राप्त किये।

**प.पू. भरतभाई ने** आशीष बरसाते हुए कहा कि यहाँ आयोजन करनेवाले संजयभाई, केतनभाई, घनश्यामभाई तथा युवक मंडल, संगीतवृंद, नृत्य के कलाकारों सभीको बहुत धन्यवाद देते है। काकाजी कहते थे कि एक रुचिवाले दो जन मिलकर भी कार्य करेंगे तो २ लाख के बराबर है और सुरुचिवाले दो करोड के बराबर है। तो कम समय में यहाँ इतना अच्छा आयोजन सभीने किया वह देखकर अच्छा लगा। जनार्दनभाई-लताबहन भी दिल्ली से खास यहाँ पधारे।

कथावार्ता में हमारा मन कम रहेता है। इसलिये योगीजी महाराजने सुनृत में बताया है कि नई नई बातों की यादी रखनी। बातें तो संतों बहुत बताते है, लेकिन उन बातों को हमें हमारे जीवन में उतारना चाहिए। हम दिल से भजन-प्रार्थना करेंगे तो भगवान जरुर सूनेंगे। भगवान सर्वत्र प्रगट ही है। पोकार करेंगे तो जरुर आपको दर्शन देंगे। तीन बात हमें समझनी है। **(१)** आस्तिकभाव - यहाँ जो बैठे है वे

P.P. Bharatbhai's 70th Birthday celebration at Nagpur

सभी भगवान को मानते है इसलिये वह आस्तिकभाव है। पूरा संसार भगवान की शक्ति से काम कर रहा है। **(२)** संत का संबंध – भगवान की शक्ति प्रगट संत द्वारा कार्य कर रही है, वो हमें सहज ही मिले है। हमें ऐसे सच्चे संत का संबंध करना है। **(३)** दिव्यभाव – मुझे जो संत मिले है वो दिव्य, कल्याणकारी, हितकारी है ऐसा दृढतापूर्वक मानना है। उससे उनके साथ हमारा संबंध दिव्य होता है और फिर कुछ मांगना, फरियाद या याचना रहती नहीं है। भगवान जिस परिस्थिति में रखते है उसमें सुखी ही रहता है। केवल भगवान की मूर्ति में रहना वही उसका लक्ष्य होता है। हम पहलीबार काकाजी को मिले तो हमें हो गया कि काकाजी मेरे और मैं काकाजी का। सहज ही अंतर में शांति हो गई। सच्चा गुरु कभी भी किसीको विवश नहीं करता। काकाजी कहते थे कि No complusion, full expression and even realization. तो ऐसे प्रगट संत हमें मिले जो हमें कभी भी छोडेंगे नहीं।

हमें हमारी सेहत अच्छी रहे उसके लिये हमेशा Yoga तथा प्राणायाम जरुर करना चाहिए। पवई में जो Project चालु है उसमें अगर कोई कुछ सेवा न कर सके १ माला तो जरुर से करें। तो सभी खुश रहे वही प्रार्थना।

**प.पू. दिनकरभाई ने** आशीष देते हुए कहा कि स्वामिनारायण भगवान का प्रागट्य छपैया में गांव में हुआ। सालों पहले गुरुहरि काकाजीने योगीबापा की आज्ञा से वहाँ छपैया स्टेशन भी बनाया। उसके बाद गुणातीतानंदस्वामी के प्रागट्यस्थान भादरा में स्टेशन बनाया था। मैं काकाजी को दि. ७ जुलाई, १९७३ में पहलीबार अमेरिका में मिला था और Love at first sight हो गया था। आज वो स्मृति उतनी ही तादृश है। काकाजीने 'मोती वेराणा चौक में' पुस्तक में बताया है कि वे अब नेपथ्य में रहकर कार्य करेंगे। उसके १ महिने बाद दि. ७ मार्च को वे स्वधाम पधारे। सन् १९८१ में शिकागो में हमारे वहाँ उन्होंने मंदिर बनाया और कहा कि यहाँ मूर्ति के आगे जो धुन करके प्रार्थना करेगा उसका काम जरुर होगा। बडेपुरुष के आशीर्वाद में बहुत बल होता है। डॉक्टर की पढाई करने के लिये बहुत महेनत करनी पडती है तो हमें अगर सत्संग का सुख लेना हो तो कितनी महेनत करनी पडेगी? तो हम हमेशा हरेक का सकारात्मक भाव से दर्शन करें। तो हमें जो सुख मिल रहा है वो हर किसीको जरुर मिलेगा। तो अगली बार आये तो भरतभाई का ७७वाँ प्रागट्यदिन भव्यता से मना सके वही प्रार्थना।

अंत में केक कटिंग से कार्यक्रम की पूर्णाहुति हुई।

दि. १२ और १३ को नागपुर से पूणे के लिये प्रस्थान किया। वहाँ प.भ. बालासाहेब कोलपे, प.भ. अंजनाबहन भटेवरा, प.भ. हितेनभाई-प.भ. वृंदाबहन, प.भ. सुमितभाई खंडेलवाल के घर पधरामणी की।

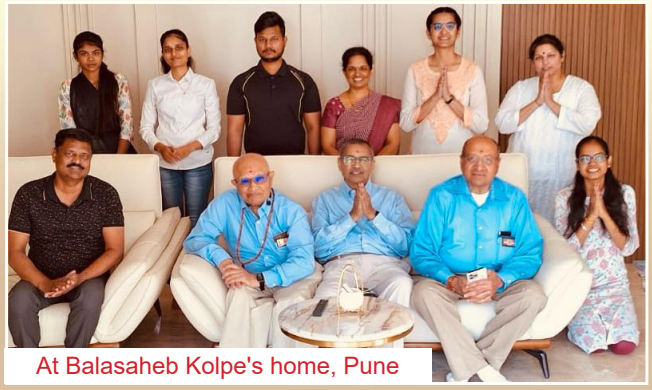
At Balasaheb Kolpe's home, Pune

At Sumitbhai Khandelwal's home, Pune

At Hitenbhai's home, Pune

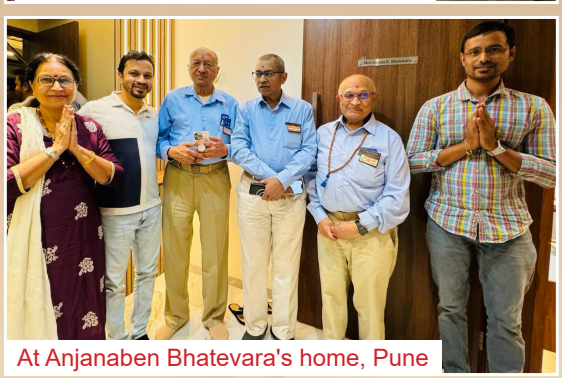
At Anjanaben Bhatevara's home, Pune

दि. १३ को वापस आते समय खारघर मंदिर पधारे थे। साथ ही पवई से प.पू. वशीभाई और हरिभक्तों भी जुडे थे। उसके बाद प.भ. के.सी.सिंघजी के वहाँ भी पधरामणी की।

At Kharghar Temple

At K.C. Singhsaheb's home, Kharghar

❊ बुधवार, दि. १४ फरवरी को योगी डिवाइन सोसायटी तथा सद्भाव फाउन्डेशन की ओर से कु. नीताबहन दोशी कर्जत के आजुबाजु के गांव की छात्राओं के लिये उनको घर से स्कूल आने-जाने की सुविधा हो सके इसलिये Bicycle वितरण की व्यवस्था हेतु खास पधारे थे। छात्राओं की ओर से सभीने उनके प्रयास की बहुत सराहना की।

At Karjat

❊ **गुरुवार, दि. १५ फरवरी को Abu Dhabi में BAPS संचालित सर्वप्रथम हिंदु BAPS स्वामिनारायण मंदिर का भव्य उद्घाटन तथा मूर्तिप्रतिष्ठा ब्र.स्व. महंतस्वामीजी की करकमलों से हुई।**

शाम को महंतस्वामीजी तथा वहाँ के राजा के प्रतिनिधि Sheikh Mohammed bin Zayed Al Nahyan एवं माननीय प्रधानमंत्री श्री. नरेन्द्र मोदीजी के द्वारा मंदिर का उद्घाटन तथा लोकार्पण का भव्य समारंभ हुआ। इस उपलक्ष्य में पवई में प.पू. दिनकरभाई, सभी संतभाईयों, संतबहनोंने Abu Dhabi मंदिर चित्रप्रतिमा का भाव से पूजन किया और आरती की तथा सभीको प्रसाद भी दिया। Abu Dhabi के इतिहास में यह प्रथम प्रसंग था जिसमें हिंदु मंदिर बनाने के लिये २३ एकर जमीन दी और वहाँ के लोकार्पण के समय महंतस्वामीजी का राजकीय अतिथि के रुप में सन्मान किया और सभी गतिविधिओं में उत्साह से हिस्सा लिया।

Opening of BAPS Hindu Temple in Abu Dhabi

Celebration at Powai of opening of BAPS Hindu Temple in Abu Dhabi

❊ **शुक्रवार, दि. १६ से दि. २२ जनवरी दौरान प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई और पू. किशोरभाई मास्टर्स गुजरात विचरण के लिये खास पधारे थे।**

**दि. १६ को वडताल मंदिर, बोचासण मंदिर के दर्शन के लिये पधारे थे।**

**गुणातीत ज्योत, विद्यानगर तथा पप्पाजी तीर्थ के दर्शन करने के बाद अनुपम मिशन में पू. पीटरभाई तथा पू. जयेशभाई को मिले। उसी दिन देर रात गुणातीत ज्योत में प.पू. हंसादीदी की हाजरी में भरतभाई का प्रागट्यदिन भी मनाया गया।**

At Bochasan temple

At Pappaji Tirth

With P. Peterbhai and P. Jayeshbhai

Blessings by P.P. Hansadidi to P.P. Bharatbhai at Gunatit Jyot

At Gunatit Jyot, Vidhyanagar

At Kantharia Temple

दि. १७ को कंथारिया में पू. विज्ञानस्वामीजी को मिले और सत्संग का लाभ लिया। वहाँ से अटलादरा के BAPS मंदिर में दर्शन करके वडोदरा में प.भ. अश्विनभाई-प.भ. कल्पुबहन, प.भ. मिलिंदभाई, प.भ. सविताबहन, प.भ. अनिलभाई बजानिया, प.भ. जनकभाई-प.भ. फाल्गुनीबहन, प.भ. गौरांगभाई-प.भ. उर्वीबहन, प.भ. विमलभाई-प.भ. विकिताबहन के घर पधरामणी करके सत्संग किया।

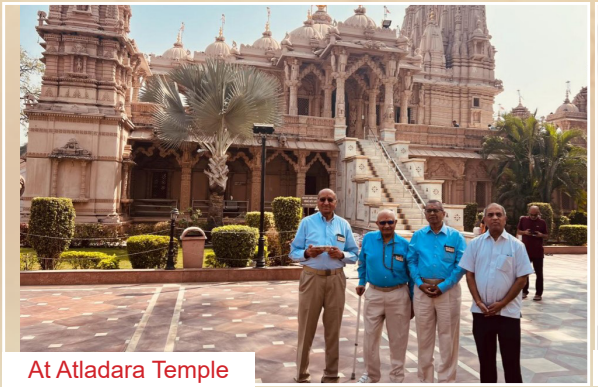

At Atladara Temple

At Ashwinbhai's home, Vadodara

At Milindbhai's home, Vadodara

At Anilbhai's home, Vadodara

At Janakbhai's home, Vadodara

At Gaurangbhai's home, Vadodara

At Vimalbhai's home, Vadodara

उसी दिन अक्षरधाम स्वामिनारायण मंदिर, पवई में १०वी तथा १२वी के छात्रों के लिये खास महापूजा हुई और वशीभाईने उनकी प्रगति के लिये संकल्प भी किया।

Special Mahapooja at "Akshardham" Temple, Powai for 10th & 12th Students

दि. १८ को ब्र.स्व अक्षरविहारीस्वामीजी के प्रागट्यदिन निमित्त खास सांकरदा पधारे। हरिधाम से पू. दासस्वामीजी और संतों, समढियाला से प.पू. निर्मलस्वामीजी, अनुपम मिशन से सद्गुरु संत प.पू. रतिकाका तथा संतभाईयों, पवई से दिनकरभाई, भरतभाई, वशीभाई, अश्विनभाई, संतबहनों तथा स्थानिक हरिभक्तों की उपस्थिति में बडी भव्यता तथा भक्तिभाव से यह उत्सव मनाया गया।

Garland behalf of Powai Devotees

B.S. Aksharvihariswamiji's Birthday celebration at Sankarda

पवई मंदिर की ओर से संतभाईयोंने अक्षरविहारीस्वामीजी की मूर्ति को हार अर्पण किया। उसके बाद वासद में प.भ. दासकाका मिले।

फिर हरिधाम में ब्र.स्व. हरिप्रसादस्वामीजी के स्मृति मंदिर के दर्शन किये तथा दासस्वामीजी को भी मिले।

Garland behalf of Chicago Devotees

At Sankarda Temple

At Daskaka's home, Vasad

At B.S. Hariprasadswamiji's Smruti Mandir-Haridham

दि. १९ को समढियाला में प.पू. निर्मलस्वामीजी को मिले। उसके बाद वहाँ से सारंगपुर मंदिर में कष्टभंजन हनुमानजी की मूर्ति के दर्शन भी किये।

At Samadhiyala Temple

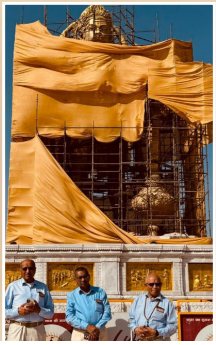

At Sarangpur Temple

प.पू. वशीभाई कंडला गये थे वहाँ से कच्छ के स्वामिनारायण मंदिर तथा शिनोय के अनुपम मिशन द्वारा संचालित मंदिर में सभा भी की और सभीको लाभ दिया।

P.P. Vashibhai at Shinai, Kutchh

दि. २० को दिनकरभाई तथा संतभाईयोंने जुनागढ मंदिर में दर्शन किये और प.भ. कानजीभाई और परिवार को मिले।

वहाँ से से माणावदर के लिये निकले। रास्ते में पिपलाणा मंदिर के दर्शन के लिये गये।

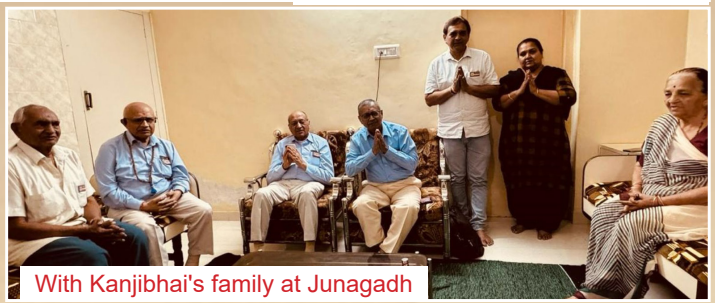

With Kanjibhai's family at Junagadh

At Piplana Temple

At Manavadar Temple

वहाँ के महंत पू. मोहनप्रकाशदासजी से मिले और किशोरभाई मास्टर्स का जन्मदिन (२० फरवरी) भी मनाया।

फिर जुनागढ में झीणाभाई दरबार की मेडी के दर्शन किये और BAPS संत पू कौशलराजस्वामीजी से मिले।

देर रात गुरुकुल के विद्यार्थीओं के साथ सत्संग किया।

With P. Kaushalrajswami of BAPS At Junagadh Temple

Night Santsang at Gurukul

With P. Aanandswamiji at Gondal old Temple

At Mukundbhai Sarvaiya's home, Rajkot

दि. २२ को गोंडल में पूराने मंदिर के दर्शन किये और वहाँ के महंत पू. आनंदस्वामीजी के साथ सत्संग किया।

उसके बाद राजकोट में प.भ. गणेशभाई के घर पधरामणी करके अनुपम मिशन से जुडे प.भ. मुकुंदभाई-प.भ. धर्मिष्ठाबहन सरवैया तथा प.भ. केतनभाई काचलिया के वहाँ पधरामणी की।

दि. २२ को छालणसर में पू. विजयप्रकाशस्वामीजी को मिले और उन्होंने दिनकरभाई का अभिवादन किया। फिर

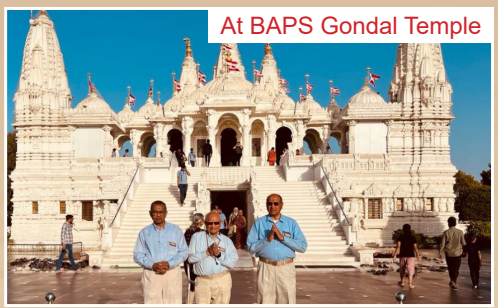

At BAPS Gondal Temple

At Ganeshbhai's home, Rajkot

At Ketanbhai's home, Rajkot

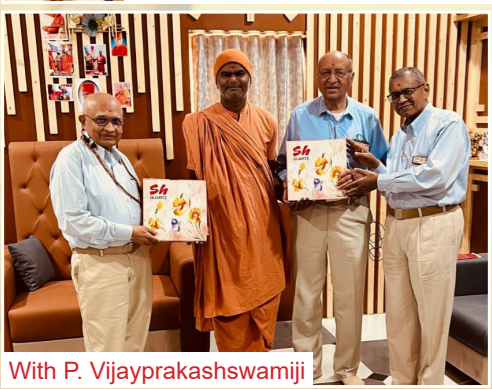

With P. Vijayprakashswamiji

भरतभाई की मासी प.भ. शारदाबहन तथा प.भ. जयसुखभाई के घर पधरामणी की।

राजकोट के पूराने मंदिर तथा ब्र.स्व. कृष्णजीअदा की देरी के दर्शन करके वापस मुंबई के लिये प्रस्थान किया।

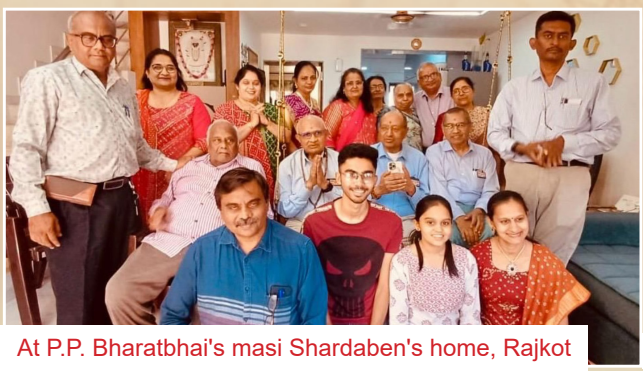

At P.P. Bharatbhai's masi Shardaben's home, Rajkot

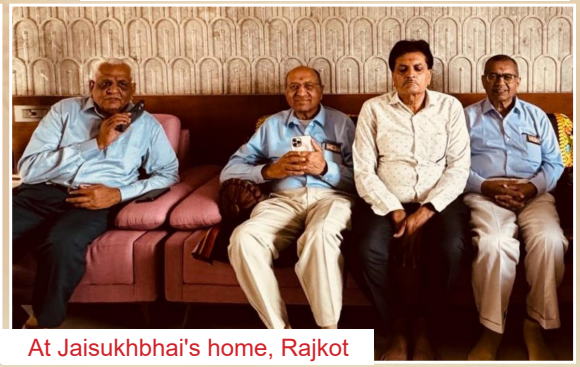

At Jaisukhbhai's home, Rajkot

**❊ रविवार, दि. २७ फरवरी को देश-विदेश के युवकों द्वारा आज की युवापेढी को भविष्य में आगे बढने के लिये विशिष्ट Zoom App International सभा का आयोजन किया गया था, जिसमें पवई से पू. मननभाईने सहृदयी पुस्तक पर, प.भ. दिनाबहन मास्टर्स (London)ने England Banking System पर, प.भ. जयभाई और पार्थभाई शाह (Paris)ने Abu Dhabi मंदिर पर, प.भ. प्रसादभाई पाटिल (मुंबई) ने 'तीर्थ' पर, प.भ. अमितभाई शाह (Chicago) Transcendental Knowledge and Divine Touch पुस्तकों पर, प.भ. स्वप्नीलभाई वारके और प.भ. पियुषभाई हरपडे (Bangalore and Hyderabad)ने Cloud Computing advancement and Data processing पर, पू. आयुषभाई (America)ने Advancement and Data Sciences पर, प.भ. राजभाई (USA)ने Technology and Hospitality पर अच्छी जानकारी दी। बाद में प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई तथा प.पू. वशीभाईने विशिष्ट आशीर्वाद दिये।**

**❊ बुधवार, दि. २८ फरवरी को गुरुहरि काकाजी महाराज के लाडले वरिष्ठ संतभाई अक्षरनिवासी प.पू. राजुभाई भट्ट का ७६वाँ प्रागट्यदिन 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में संतभाईयों, संतबहनों की उपस्थिति में भक्तिभाव से मनाया गया।**

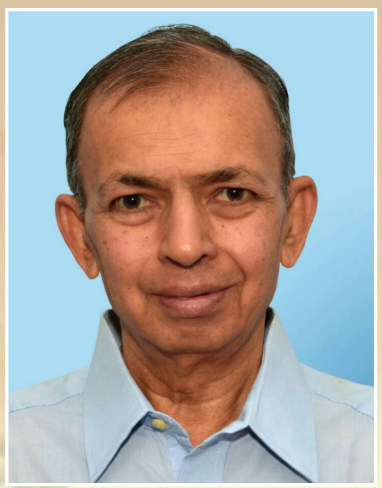

**प.पू. वशीभाई ने** कहा कि राजुभाई भट्ट के पिताजी वकील थे और उस जमाने में कांदिवली में भट्ट वकील का बंगला प्रख्यात था। उनके पिताजी का विरोध था, इसलिये गुरुहरि काकाजीने राजुभाई को पोपटभाई के वहाँ रखा था। पहले उन्होंने पटेल रुबी दुकान में काम किया। उनको Engineering करना था, लेकिन काकाजीने वकील की पढाई करने की आज्ञा की। वकील बनाने के पीछे काकाजी का दूसरा हेतु यह भी था कि उनके पिताजी का विरोध कम हो जाये। सत्पुरुष के वचन से अपने मन को मारके आगे बढते है तो वचनामृत में बताये गये कल्याणीकारी गुण हमारे अंदर उदय होते है। राजुभाई वफादार सेवक थे। किसीके प्रति बिलकुल भी वेरभाव नहीं था। समत्वभाव, निर्दोषभाव रखके वो सभी के साथ हिलमिलकर रहते थे। वे कभी भी किसीको जाणपणा नहीं देते थे। हमारे प्रति उनको बहुत प्रेम था। परिस्थिति को समझकर कार्य करते थे। राजुभाईने अपने जीवन में बहुत सहन किया, लेकिन कभी भी कोई अपेक्षा रखी नहीं। साधुता की किमत होती है। सिद्धांत के लिये जिम्मेदारी के साथ काम करना पडता है। हम हमारी मनमानी करें ऐसा नहीं चलता। तो राजुभाई जैसी साधुता हमारे अंदर आये वही प्रार्थना।

**प.पू. दिनकरभाई ने** कहा कि राजुभाई बहुत शांत स्वभाव के और कम बोलते थे। वे अमेरिका भी आये थे और उनके साथ हमने पधरामणी भी की थी। उस जमाने में Online की System नहीं थी, तो टिकट Reservation के कार्य में राजुभाई खुद लाईन में घंटो तक खडे रहकर सारी व्यवस्था करते

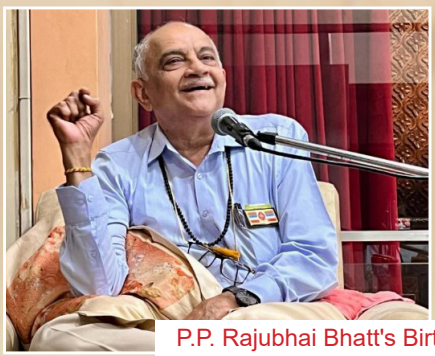

P.P. Rajubhai Bhatt's Birthday celebration at "Akshardham" Temple, Powai

थे। तो हमें जो भी सेवा मिले उसमें दिव्यभाव रखकर कर लेनी चाहिए। सन् १९८४ में राजुभाई भट्ट और काकाजी के साथ हम Washington, D.C. और अन्य स्थानों में विचरण के लिये गये थे। हम तीन गाडियाँ लेकर निकले थे। तब एक भक्त के घर जा रहे थे तब काकाजी उनके गाडी में उसके घर पहुँच गये थे। हम उनके पीछे बराबर जा रहे थे। तब दासकाका की गाडी हमारे से अलग हो गई। तो मुझे ऐसा हुआ कि दासकाका कैसे आयेंगे? मैं ऐसा सोच रहा था कि शिकागो में उनके घर फोन करके बता देता हूँ कि अगर दासकाका का फोन आये तो यहाँ का पत्ता दे देना। उतने में काकाजी बाथरुम में से आये और मैंने उनको सब बात बताई। तो काकाजीने कहा कि ये सब सोचना बंद करो, धुन करो। सिर्फ १० मिनट धुन की और इतने में दासकाका आ गये। तब से हमें दृढ हो गया कि कभी भी कुछ भी तकलीफ आये तो धुन का उपाय ले। वैसे कोई भी प्रसंग बनता तो राजुभाई धुन करवाते थे। पवई मंदिर बनाने के समय राजुभाईने वकील के रुप में बहुत सहाय की थी। तो हे राजुभाई! जैसे आपने काकाजी के साथ दिव्य संबंध किया वैसे हम हमारे गुरु के साथ दिव्यता का संबंध दृढ करें वही प्रार्थना।

**पू. अश्विनभाई ने** कहा कि सन् १९७३ में मैं बीमार हो गया था कि घर जाने का सोचा। तो मैंने राजुभाई को बताया। उन्होंने काकाजी से बात की। काकाजीने कहा कि ऐसे परेशान होने की क्या जरुरत है? मैंने केवल काकाजी को प्रार्थना की कि मुझे कोई बीमारी नहीं चाहिए। तब से अभी तक कभी भी कोई बडी बीमारी मुझे हुई नहीं। राजुभाईने काकाजी के सिद्धांत को पक्का रखा कि कांतिकाका, मम्मीबा, घनश्यामभाई सभीको राजी रखना। उनका हम सभी संतभाईयों के साथ अनोखा संबंध था। तो हम छोटी छोटी बात में प्रतिभाव देते है ऐसा न करें और काकाजी राजी हो ऐसा जीवन जीये वही प्रार्थना।

**प.पू. भरतभाई ने** कहा कि राजुभाई के साथ जीवन जीने मिला वो हमारा सौभाग्य था। वो हमें बहुत आनंद भी कराते थे। उन्होंने सिखाया कि हमेशा खुश रहना। वे हरपल अपनी मस्ती में रहते थे और मन को केवल प्रभु में रखते थे। कुरुक्षेत्र में दूर रहकर भी काकाजी की प्रसन्नता उन्होंने प्राप्त की। कोई अंगत सेवा किये बिना उनका राजीपा प्राप्त कर लिया। राजुभाईने संबंधवाले का महिमा समझकर काकाजी जैसे रखते वैसे रहते थे। काकाजी को उनपर पूरा भरोसा था। कितनी भी खराब परिस्थिति होती तो भी वे मूर्ति के केफ में रहते थे। उनका कथावार्ता करने का अंग नहीं था फिर भी हमें कब क्या करना चाहिए वो बराबर समझा देते थे। वे एकदम स्थिर बुद्धिवाले थे। काकाजी उनके ऊपर अधिकार करते थे। राजुभाई, रमेशभाई सोनी सभीके साथ इतने आत्मीयता से जुड गये थे कि हम साधना कर रहे है ऐसा लगा ही नहीं, केवल आनंद ही किया। तो वैसे हम किसीका देखे बिना हिलमिल कर सत्संग करें वही प्रार्थना।

**❊ शुक्रवार, दि. १ मार्च को झालळसर से पू. विजयप्रकाशस्वामीजी की ओर से पू. दर्शनस्वामीजी और पू. सर्वेश्वरस्वामीजी अक्षरधाम स्वामिनारायण मंदिर, पवई दर्शन के लिये पधारे थे और प.पू. दिनकरभाई और अन्य संतभाईयों को मिले।**

P. Darshanswamiji and P. Sarveshwarswamiji at "Akshardham" Temple, Powai

## अक्षरधामगमन

**❊ संभाजी नगर के सेवाभावी एवं सरल ऐसे प.भ. धनराजभाई मेघानंदजी (उम्र-७०) काफी समय से बीमारी से जूँझकर मंगलवार, दि. २७ को अक्षरनिवासी हुए।**

प.भ. दीपकभाई जहागीरदार के बचपन के मित्र ऐसे धनराजभाई सन् २००३ में जब पवई मंदिर तैयार हुआ तब सत्संग से जुडे और Transport की सेवा में भक्तों को लेकर आने-जाने की बहुत अच्छी सेवा सँभाली थी। उनकी चार बेटियाँ प.भ. प्रार्थनाबहन, प.भ. प्रथाबहन, प.भ. प्रतिमाबहन, प.भ. प्रतिकाबहन और बेटा प.भ. संकेतभाई मंदिर की हर क्रिया में बहुत भाव से सेवा प्रदान करते है। धनराजभाई की पत्नी प.भ. रचनाबहन भी सभी संतभाईयों, संतबहनों की भाव से सेवा करती है।

प.पू. महेन्द्रबापु, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई तथा सभी संतभाईयों और संतबहनों जब भी संभाजी नगर पधारते है तब पूरा मेघानंद परिवार उनकी सेवा में तत्पर होते है।

दि. ४ मार्च को प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, पू. किशोरभाई मास्टर्स और अन्य हरिभक्तों हरि मंदिर में उनकी त्रयोदशी की महापूजा में खास पधारे थे और परिवार को आशीष दिये थे।

**भगवान स्वामिनारायण, गुरुहरि काकाजी और सभी गुणातीत स्वरुपों उनके परिवार को इस दुःख से उभरने के लिये बल दे वही प्रार्थना।**

❊ ❊ ❊

## મરજીવાને માર્ગે જન કોઈક જાવે રે...

**હે વહાલા સત્સંગીઓ!**

તમને ઉપરોક્ત શીર્ષક વાંચતાં જ ખ્યાલ આવી જશે કે **'મરજીવાનો માર્ગ'** એ કોઈ સામાન્ય વ્યક્તિ માટે નથી. ઉપરના શીર્ષકમાં જ કહ્યું છે એમ કોઇક જન એ માર્ગે ચાલવાનો સંકલ્પ કરે અને એમાંથી પણ કોઇક જ જન એ માર્ગે ચાલે છે. ગુજરાતી કવિ પ્રિતમના કાવ્યની કડી છે કે 'હરિનો મારગ છે શૂરાનો...' એમ હરિનો મારગ એટલે કે ભગવાનને માર્ગે ચાલવા માટે પણ હૈયામાં હામ જોઇએ. જેવા-તેવાનું ત્યાં કામ નથી. અલખને માર્ગે ચાલેલા કેટલાય યાત્રીઓ થોડીક વિટંબણાઓમાં પાછા વળી ગયેલા છે. કોઇક જ નિશાને પહોંચે છે. એ રસ્તે આવતી મુશ્કેલીઓ, પ્રલોભનો, સિદ્ધિઓમાં અટવાઈ જઈને તેઓ તેમનો ધ્યેય ચૂકી જાય છે અને બીજી જ દિશામાં તેમનો રસ્તો ફંટાઈ જાય છે. ખરેખર એવા તો કોઇક જ હોય કે જેઓ અંતિમ ધ્યેય પર પહોંચીને ધાર્યું નિશાન પાર પાડે અથવા નિશ્ચિત સિદ્ધિ હાંસલ કરે.

ગુરુહરિ કાકાજી મહારાજના જીવનમાં જોઈએ તો તેઓએ નાનપણથી જ અલખના માર્ગના પોતે કોઈ વિરલ યાત્રી હોય એમ સાહસ, શૂરવીરતા, કૃતનિશ્ચયતા, નિડરતા જેવી લાક્ષણિકતાઓનું દર્શન કરાવ્યું છે. ૭ વર્ષની ઉંમરે જ તેમણે અને પ.પૂ. પપ્પાજીએ 'સ્વર્ગ પૃથ્વી પર લાવવું છે'ની કલ્પના કરી હતી, કેવળ કલ્પના જ કરી એટલું નહીં, પરંતુ તે માટે ભગીરથ પ્રયત્નો કરીને સ્વર્ગ તો શું પણ સાક્ષાત્ અક્ષરધામ પૃથ્વી પર ખડું કરી દીધું! બ્ર.સ્વ. યોગીજી મહારાજે તેમના તારદેવના નિવાસસ્થાન – ૬/ડી, સોનાવાલા બિલ્ડીંગને **'અક્ષરધામરૂપી તખત'** જેવી ઉપમા આપી હતી. એ પરથી જ આપણને ખ્યાલ આવે છે કે તેઓ અસામાન્ય તો નહીં, પણ અતિ અસામાન્યમાં પણ અતિ અસામાન્ય વિભૂતિઓ હતા.

કાકાજી તો નાનપણથી જ કંઈક નવું કરવાની મહત્વાકાંક્ષા ધરાવતા અને તેને માટે જોખમ પણ લેતા. ૭ વર્ષે જ એક વખત નડિયાદમાં બધા છોકરાઓને તળાવમાં મસ્તી કરતાં જોઈ તેઓ પોતે પણ તરતાં ન આવડતું હોવા છતાં છલાંગ મારી પાણીમાં પડ્યા હતા. કાકાજીને પતંગ ચગાવવાનો ખૂબ શોખ હતો. પતંગ પકડવા તેઓ પોતાના અને બાજુના મકાનનાં છાપરાં પર કૂદકા મારે, તેમાં તેમને પડી જવાની, વાગી જવાની બીક જ નહતી.

એક વખત નડિયાદ ગામમાં કોઈ મોટી ક્રિકેટ મેચનું આયોજન થયું હતું તો એ જોવા માટે છોકરાઓએ એમની શાળાના માસ્તર પાસે શાળાને વહેલી છોડી દેવા માટે રજા માંગી, પરંતુ આ 'શાળાના નિયમની વિરુદ્ધ છે' એમ કહી તેઓએ રજા ન આપી તો પોતે શાળાનો છૂટવાનો ઘંટ વગાડી સહુને માટે ક્રિકેટની મેચ જોવાની સગવડ કરી આપી. પાછળથી પ્રિન્સિપાલને ખ્યાલ આવી જતાં એમણે એમને શિક્ષા પણ કરી, પરંતુ એ શિક્ષા ભોગવવાના દુઃખ સામે આટલા બધા છોકરાઓની ખુશી કાકાજીને મન અધિક હતી. આમ અન્યની ખુશી માટે પણ તેઓ ગમે તેવું જોખમ લેવા તૈયાર થઈ જતા.

એક વખત આણંદમાં કોઈ લગ્નમાં તેઓ અને પપ્પાજી ગયા હતા. પાછા ફરતી વખતે આણંદથી નડિયાદ જતી ટ્રેનમાં કાકાજીએ ફેરિયાઓને ચાલુ ટ્રેને ચઢતા ને ઉતરતા જોયા એટલે તેમણે પણ ચાલુ ટ્રેને કૂદકો માર્યો, પણ ટ્રેનની ઝડપ વધવાથી પાછા ચઢી શક્યા નહીં. તેથી નડિયાદ તેમના નાનાને ખબર પડી તો એમને ખૂબ ઠપકો આપ્યો હતો. પપ્પાજી એમની જોડે જ હતા. ત્યારે એમણે કાકાજીને કહ્યું હતું કે 'તે આવું સાહસ કેમ કર્યું?' તો તેઓએ કહ્યું કે 'આ ફેરિયાઓની જેમ મારે પણ ચાલુ ટ્રેને ચઢાય કે ઊતરાય છે કે નહીં તે જોવું હતું.' ત્યારે પપ્પાજીએ કહ્યું કે 'તેમની ઉંમર અને તેમનો રોજનો અનુભવ એટલે એ લોકો કરી શકે. આવું જોખમ આપણાથી ન લેવાય.'

ધીમે ધીમે એ સાહસવૃત્તિ અને શૂરવીરતા એમને જીવનપથ પર આગળ જતાં ખૂબ જ કામમાં આવી. ૯ વર્ષે જ નડિયાદમાં એક હરિભક્ત રામચંદ્રકાકાને ઘરે જ કાકાજીએ બ્ર.સ્વ. શાસ્ત્રીજી મહારાજને એવું કહેતા સાંભળ્યા કે 'મૂર્તિનું સુખ જોઈએ તો મરવું પડે.' કાકાજીએ નાનપણથી જ શ્રેષ્ઠ ધ્યેય પ્રાપ્ત કરવાનાં જ સપનાઓ જોતા. તેથી બીજે જ દિવસે તેઓએ શાસ્ત્રીજી મહારાજ પાસે જઈ કહ્યું કે 'હું મરવા આવ્યો છું.' આમ નિશ્ચિત કરેલા કાર્યની સફળતા માટે ગમે એવું જોખમ કે સાહસ ખેડવા તેઓ તત્પર રહેતા.

શાસ્ત્રીજી મહારાજ પ્રત્યે અસાધારણ પ્રીતિ હોવાથી કાકાજીએ જોયું હતું કે શાસ્ત્રીજી

મહારાજને એમના યુગકાર્ય – અક્ષરપુરુષોત્તમ ઉપાસનાના પ્રવર્તનનાં મંદિરો બાંધવા માટે પૈસાની ખૂબ જ ખેંચ પડે છે. કાકાજીના નાનાનો પૈસાની ધીરધારનો વ્યવસાય હતો. તેથી ઘણી વખત તેઓ કાકાજીને પોતાની ઓળખીતી વ્યક્તિઓ પાસે પૈસાની આપ–લે કરવા મોકલતા. આથી એ વ્યક્તિઓને પણ કાકાજી સાથે સારો પરિચય થઈ ગયો હતો. શાસ્ત્રીજી મહારાજને પડતી તકલીફમાં મદદરૂપ થવાના હેતુથી કાકાજીએ વેપારીઓ પાસે જઈને પૈસા લીધા અને પછી સટ્ટો કર્યો. પરંતુ તેમનાં પાસાં ઊંધા પડ્યાં અને એ જમાનામાં અઢી હજાર રૂપિયા જેવી માતભર રકમની તેમને ખોટ પણ ગઈ. જો કે પાછળથી એ દેવું ભરપાઈ થઈ ગયું, પરંતુ આટલી નાની ઉંમરે પણ તેમણે શાસ્ત્રીજી મહારાજ માટે શું ન થાય? એવી પોતાની જીવનભાવના દર્શાવી દીધી હતી.

કાકાજીએ અભ્યાસ પૂરો કર્યા પછી ધંધો શરૂ કર્યો. શરૂઆતમાં નોકરી કરી ત્યારે પણ તેમના વિચારો તો કેમ કરીને વધુ પૈસા કમાવવા અને કૌટુંબિક દેવું ચૂકતે કરી શાસ્ત્રીજી મહારાજને મદદરૂપ થાઉં એ એક જ લક્ષ્ય હતું. ધંધાની થોડી આંટીઘૂંટી સમજી લીધા પછી તેમણે પોતાના શેઠ સામે જ હરિફાઈ કરી હતી અને તેમાં તેઓ સફળ પણ થયા હતા. એ જ પ્રમાણે શાસ્ત્રીજી મહારાજે શરૂ કરેલ ગઢપૂર મંદિરની સેવા માટે પોતાના ધંધાના ૧૫ હજાર રૂપિયાને બદલે શાસ્ત્રીજી મહારાજે ૫૧ હજાર રૂપિયા માંગ્યા છતાંય કંઈપણ વિચાર કર્યા વગર કાકાજીએ એ સગવડ પણ કરી આપી હતી.

આજે આપણને આ બધું કહેવું કે લખવું બહુ જ સહેલું લાગે છે, પરંતુ તે વખતે એમણે જે સેવા કરી તે અતિ અદ્‌ભુત અને વિરલ હતી. વળી તે તો એમણે કરેલી અનેક સેવાઓના એક ભાગરૂપે જ હતી. પરંતુ શાસ્ત્રીજી મહારાજ માટે એમને એ કક્ષાએ પ્રીતિ હતી કે તેમને માટે પોતાની જાતને પણ તેઓ હોડમાં મૂકી દેતા.

કાકાજી હંમેશાં છલાંગ મારવાની વાત કરતા. સીડીનો માર્ગ એમને પસંદ ન હતો, કારણ કે તેમાં સમય તો વધુ લાગે જ, પણ કોઈક વિઘ્ન અને પ્રલોભનો આવે તો અધવચ્ચે જ અટકી પડાય એવું જોખમ પણ રહેતું. તેથી તેઓ બધી બાબતમાં છલાંગ મારી પહોંચી જવામાં જ સાર્થકતા સમજતા. યોગીજી મહારાજે પણ તેમની સાહસવૃત્તિ, નીડરતા અને નિષ્ઠા જોઈ તેમને જાણે પોતાના યુગકાર્ય માટે સૂત્રધાર તરીકે પસંદ કર્યા હતા અને કાકાજીએ ખૂબ જ સુંદર રીતે એ જવાબદારીઓ નિભાવી એમના અંતરે હાશ કરી હતી.

યોગીજી મહારાજે કાકાજીને પહેલા ગુલઝારીલાલ નંદાજીની ચૂંટણીનું અત્યંત વિકટ અને અશક્ય લાગતું કામ સોંપ્યું હતું. કાકાજી તેમાંથી પસાર થયા અને નંદાજીને જીતાડ્યા તો યોગીજી મહારાજે તેમને સાક્ષાત્કાર કરાવ્યો. તે પછી પોતાનો ખૂબ જ ઘીકતો ધંધો અને દોમદોમ સાહ્યબી છોડી કાકાજી યોગીજી મહારાજના વચને જીવવા તત્પર થઈ ગયા. બાપાના જ વચને ભણેલા–ગણેલા ૫૧ યુવાનોને તૈયાર કરી સાધુ થવા માટે પ્રેરિત કર્યા. એ જમાનામાં ભણેલા–ગણેલા યુવાનોની નજર અને દોટ પશ્ચિમ તરફ – અમેરિકા કે ઈંગ્લેંડ તરફ હોય તેવે વખતે તેમને બધી જ રીતે મનાવી તેમના જીવમાં યોગીજી મહારાજ પ્રત્યે પ્રીતિ જગાવવી એ લોઢાના ચણા ચાવવા જેવી વાત હતી. પરંતુ કાકાજીને માટે બાપાના રાજીપા આગળ કોઈ વાત અઘરી કે મુશ્કેલ ન હતી. એવી જ રીતે બહેનોને ભગવાન ભજાવવા માટે તેમણે પોતાની આબરૂ, પૈસા, સર્વ પ્રકારનો ભીડો, સામાજિક બહિષ્કાર બધું જ હોડમાં મૂકી દીધું અને પપ્પાજી, સોનાબા તથા અંગત હરિભક્તોનો સાથ લઈ એ કાર્ય પણ પૂરું કર્યું. લૌકિક રીતે તો બહેનોનાં કાર્ય માટે જ તેમને અને પપ્પાજીને અક્ષરપુરુષોત્તમ સંસ્થામાંથી છૂટા થવું પડ્યું પરંતુ તે મુશ્કેલીને પણ તેઓએ સુવર્ણ તક માનીને બ્ર.સ્વ. હરિપ્રસાદસ્વામીજી, બ્ર.સ્વ. અક્ષરવિહારીસ્વામીજી, સંતભગવંત સાહેબજી, પ.પૂ. હરિભાઈ સાહેબ જેવા જ્યોતિર્ધરોનો સાથ લઈ ભવ્ય ગુણાતીત સમાજનું સર્જન કર્યું.

હરિભક્તો માટે કાકાજી ગમે એવું જોખમ લેવા તૈયાર રહેતા. અત્રે એક જ દાખલો પર્યાપ્ત છે. બોરીવલીના હિંમતલાલ સોની નામના એક ભક્તને પોતાના કામકાજની ખોટી રીત બદલ ગૂંડાઓએ ધમકી આપી તેમને ઘરે ઘેરો નાંખ્યો હતો. તો તેમને સમજાવવા કાકાજીએ ગૂંડાઓની વચ્ચે પણ જઈ સમાધાન કરી આપ્યું હતું. તે વખતે યોગીજી મહારાજના સંબંધ આગળ એ ગૂંડાઓની ધમકી કે જાનના જોખમની પરવા પણ ન કરી હતી. કાકાજી ઘણીવાર એવું કહેતા કે અમે માર ખાઈને મલિદો મેળવ્યો છે અને તમને મફતમાં આપ્યો છે. તમારે તો ફક્ત જતન જ કરવાનું છે.

**હે વહાલા હરિભક્તો,**

આ તો એક કાકાજીના અતિ વિશાળ અને અકલ્પ્ય જીવનરીતિમાંથી નાનું સરખું આચમન છે. એમના જીવનમાંથી તો કેટલાય આવા પ્રસંગો મળી આવશે કે જ્યાં તેઓ આવી રીતે મરજીવાને માર્ગે ચાલ્યા છે. જાણે તે માર્ગ જ તેમને માટે એક માત્ર રસ્તો હોય એટલી સહજતાથી તેમણે બધાં વિઘ્નો અને અવરોધોને ઓળંગી ગયા છે અને પોતાના ગુરુ, સાથીદારો અને હરિભક્તો માટે ખૂબ જ સાનુકૂળતા કરી આપી છે. એક ગુજરાતી કવિની સુંદર પંક્તિ છે...

**‘માધવનું મન એ તો એવો મહેરામણ કે તાગ એનો કોઈથી ન આવે,**
**લાખો મરજીવામાં માંડ કોક એકાદો મૂઠ્ઠીમાં મોતીડાં લાવે...’**

**સહુથી પહેલાં તો લાખો મનુષ્યમાં કોઈ મરજીવા જ ન મળે. એ તો લાખમાં લાધે નહીં અને કરોડમાં કોક જ હોય. એવા લાખો મરજીવામાં પણ એકાદ જણ જ આવી રીતે ચાહોમ કરીને ઝંપલાવે અને અમૂલ્ય મોતીઓનો ઉપહાર લાવી શકે. કાકાજીએ તો એથીય આગળ એ મોતીઓના ઉપહારની સહુને લ્હાણી કરી ઉજાણી જેવો અખંડ આનંદનો માહોલ ઊભો કર્યો જેનાં ફળ આપણે અત્યારે માણી રહ્યા છીએ. કાકાજીના ૩૯મા દિવ્ય સ્મૃતિદિન અવસરે (તા. ૭ માર્ચ) તેઓના ચરણે આપણે એ જ પ્રાર્થના કરીએ કે તેમણે જે મોતીઓનો ઉપહાર આપણને આપ્યો છે, અદ્‌ભુત ગુણાતીત જ્યોતિર્ધરો અને સંતભાઈઓ, સંતબહેનો અને મુક્તોની જે ભેટ આપણને આપી છે તે તેઓમાં સંપૂર્ણ વિશ્વાસ રાખી આપણા ગુરુની મરજી મુજબ દિવ્યભાવે એમને રાજી કરી આપણું જીવન સુખી કરી શકીએ એ જ ભગવાન સ્વામિનારાયણ, ગુરુહરિ કાકાજી અને સહુ ગુણાતીત સ્વરૂપોને ચરણે પ્રાર્થના...**

RNI Regn No : MAHMUL/2015/62272
Date of publication: 8th of every month
POSTED AT MUMBAI PATRIKA CHANNEL SORTING OFFICE MUMBAI 400001

Postal Regn No: MCW/329/2018-20
Date of posting:11th of every month

## Summary of Events

**(1) 22nd Patotsav Vidhi of "Akshardham" Temple, Powai and Guruhari Kakaji Maharaj's 72nd Sakshatkar Din on 3rd February at "Akshardham" Temple, Powai. (2) Bhajan Sandhya at Sambhaji Nagar on 7th February. (3) P.P. Bharatbhai's 70th Pragatyadin celebration at Sambhaji Nagar on 8th February. (4) P.P. Bharatbhai's 70th Pragatyadin celebration at Nagpur on 11th February. (5) Yogi Divine Society and Sadbhav Foundation distributed Bicycle to the School Students at Karjat on 14th February. (6) Visit by Saint Brothers to Gujarat from 16th to 22nd February. (7) Inauguration of BAPS Swaminarayan Mandir at Abu Dhabi and celebration at "Akshardham" Temple, Powai on 15th February. (8) Visit by Saint Brothers at Kharghar Temple on 22nd February. (9) Pragatyadin celebration of B.S. Aksharvihariswamiji at Sankarda on 18th February. (10) Visit by P.P. Vashibhai to Kutch on 19th February. (11) International Youth Sabha at "Akshardham" Temple, Powai on 25th February. (12) P.P. Rajubhai Bhatt's 76th Pragatyadin celebration at "Akshardham" Temple, Powai on 28th February. (13) Akshardhamgaman of P.B. Dhanrajbhai Meghanand at Sambhaji Nagar on 27th February. (14) Visit by P. Darshanswamiji and P. Sarveshwarswamiji at "Akshardham" Tmeple, Powai on 1st March. (15) Article on the occasion on Guruhari Kakaji Maharaj's 39th Divine Smrutidin on 7th March.**

Space for address

Space for franking

Printed Matter - Book Post

From

YOGI DIVINE SOCIETY
6D Sonawala Building, Tardeo,
Mumbai - 400 007 Tel: 2380 2527

'Akshardham' Swaminarayan Temple,
Near Hiranandani Hospital, Powai, Mumbai - 400 076
Tel: 2578 2151/2579 4314 Email: isrc@kakaji.org

Printed & Published by Bharat P Mehta on behalf of Yogi Divine Society & Printed at Jalaram Enterprise, Fairy Manor, 13, Rustom Sidhwa Marg (Gunbow Street), Fort, Mumbai - 400 001 & Published by Yogi Divine Society, 6D, Sonavala Building, 4th Floor, Tardeo, Mumbai - 400 007.

Editor: Bharat P Mehta